वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच: एक सामाजिक-कानूनी विश्लेषण

Access to Health Care and Social Security for Senior Citizens: A Socio-Legal Analysis

शीर्षक:

शोधकर्ता ममता शर्मा

सार (Abstract)

भारत एक बढ़ती जनसंख्या वाला देश है आंकड़ों के अनुसार भारत में वृद्ध जनों की जनसंख्या में भी तेजी से बढ़ोतरी हो रही है। जिसके कारण अब वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य, आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक सम्मान से जुड़े प्रश्न अति महत्वपूर्ण हो गए हैं। इस शोध-पत्र के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करते हुए सामाजिक एवं कानूनी दृष्टिकोण से सुक्ष्म परीक्षण किया गया है। अध्ययन करते समय यह पाया गया कि यद्यपि सरकार ने अनेक योजनाएँ और कानून बनाए हैं, जो वरिष्ठ नागरिकों से संबंधित है, फिर भी जागरूकता की कमी, प्रशासनिक बाधाएँ, आर्थिक विषमता और सामाजिक उपेक्षा के कारण इन सुविधाओं का पूरा लाभ सभी तक नहीं पहुँच पा रहा है। यह शोध -पत्र वर्तमान व्यवस्था की कमियों और बुराइयों को को अंकित करते हुए सुधारात्मक सुझाव भी रेखांकित करता है।

प्रमुख शब्द (Keywords)

आर्थिक विषमता,वरिष्ठ नागरिक, स्वास्थ्य देखभाल, सामाजिक सुरक्षा, कानून, वृद्धजन कल्याण, योजनाएं, जागरूकता।

1. प्रस्तावना

भारत एक निरंतर विकास करने वाले देशों में से एक है इसी कारण से भारत में स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था लगातार विकसित हो रही है। जनसंख्या के वृद्धि होने के साथ-साथ वरिष्ठ नागरिकों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत में 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्ति को वरिष्ठ नागरिक या वृद्धजन माना जाता है।

वरिष्ठ नागरिक समाज का एक अति महत्वपूर्ण भाग हैं, जिन्होंने अपने जीवन का बड़ा महत्वपूर्ण हिस्सा राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया है। लेकिन जब वे वृद्ध हो जाते हैं तो वृद्धावस्था में उनको स्वास्थ्य समस्याओं, आर्थिक निर्भरता, सामाजिक अलगाव और कानूनी असुरक्षा का सामना क्यों करना पड़ता है?

इस शोध-पत्र का उद्देश्य यह है कि वरिष्ठ नागरिकों को स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सुरक्षा तक किस हद तक पहुँच प्राप्त है तथा क्या सुविधाये उपलब्ध है। इसके लिए कौन-कौन सी सामाजिक और कानूनी चुनौतियाँ का सामना करना पड़ता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

A.वरिष्ठ नागरिकों के लिए उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं काअध्ययन करते हुए विश्लेषण करना।

B.सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की प्रभावशीलता का विस्तार से अध्ययन करना।

C.संबंधित कानूनों का मूल्यांकन करना एवम्

व्यावहारिक समस्याओं को पहचानना और उनका अध्ययन करना।

D.सुधार के लिए सुझाव देना

3. अनुसंधान पद्धति (Methodology)

यह शोध पूर्ण रूप से द्वितीयक (secondary) स्रोतों पर आधारित है, जिसमें पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों, शोध पत्रों, और विधिक प्रावधानों का अध्ययन विस्तार से किया गया है। इसमें दो प्रकार की विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है।

4. वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ-

4.1 प्रमुख स्वास्थ्य मुद्दे समस्याएँ

उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग

मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ (डिप्रेशन, डिमेंशिया)

शारीरिक कमजोरी और गतिशीलता में कमी

दीर्घकालिक बीमारियाँ

4.2 स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता

भारत में स्वास्थ्य सेवाएँ दो स्तरों पर उपलब्ध हैं:

सरकारी स्वास्थ्य सेवाएँ

निजी स्वास्थ्य सेवाएँ

हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सीमित है।

4.3 प्रमुख सरकारी योजनाएँ

राष्ट्रीय वृद्ध स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम (NPHCE)

आयुष्मान भारत योजना

जन औषधि योजना

इन योजनाओं का उद्देश्य सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना है, लेकिन जागरूकता की कमी और प्रशासनिक समस्याओं के कारण इनका लाभ सीमित रह जाता है।

5. सामाजिक सुरक्षा की अवधारणा

सामाजिक सुरक्षा का अर्थ है–व्यक्ति को आर्थिक और सामाजिक जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करना, जैसे वृद्धावस्था, बीमारी, बेरोजगारी आदि।

5.1 भारत में सामाजिक सुरक्षा के प्रकार

पेंशन योजनाएँ

बीमा योजनाएँ

सब्सिडी और सहायता

5.2 प्रमुख योजनाएँ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना

अटल पेंशन योजना

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना

इन योजनाओं का उद्देश्य आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना है, लेकिन कई वरिष्ठ नागरिक इनका लाभ नहीं ले पाते इसका मुख्य कारण जागरूकता का अभाव है।

6. वरिष्ठ नागरिकों के लिए कानूनी प्रावधान

6.1 प्रमुख कानून

माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम, 2007

इस कानून के तहत:

बच्चों को माता-पिता की देखभाल करना अनिवार्य है माता-पिता की उपेक्षा करना कानूनी अपराध है। इस अपराध के लिए

वरिष्ठ नागरिक ट्रिब्यूनल में शिकायत कर सकते हैं। इस कानून के माध्यम से

भरण-पोषण की भी व्यवस्था सुनिश्चित की जाती है।

6.2 अन्य कानूनी संरक्षण

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 (राज्य का कर्तव्य)

अनुच्छेद 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार)

ये प्रावधान वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करते हैं। उपरोक्त कानूनी संरक्षण संवैधानिक संरक्षण के रूप में प्रदान किए गए हैं इसके उल्लंघन पर उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय में याचिका लगाई जा सकती है।

7. सामाजिक दृष्टिकोण और चुनौतियाँ

7.1 पारिवारिक संरचना में परिवर्तन

संयुक्त परिवारों का विघटन

एकल परिवारों का बढ़ना

प्रवासन (Migration)

इन कारणों से वृद्धजन अकेले रह जाते हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से पारिवारिक संरचना में परिवर्तन वृद्ध जनों की स्थिति में परिवर्तन का मुख्य कारण है।

7.2 आर्थिक निर्भरता

पेंशन की कमी

रोजगार के अवसरों का अभाव

बचत का अभाव

उपरोक्त कारणों से वरिष्ठ नागरिकों की आर्थिक निर्भरता बढ़ जाती है। आर्थिक निर्भरता ही वृद्ध जनों के लिए सबसे बड़ी समस्या के रूप में उभर कर आती है।

7.3 सामाजिक उपेक्षा और दुर्व्यवहार

भावनात्मक उपेक्षा

आर्थिक शोषण

शारीरिक दुर्व्यवहार

उपरोक्त कारण वरिष्ठ जनों के सामाजिक अपेक्षा और दुर्व्यवहार का मुख्य कारण है।

7.4 डिजिटल विभाजन

आज अधिकांश सेवाएँ ऑनलाइन हो गई हैं, लेकिन वरिष्ठ नागरिक डिजिटल तकनीक से परिचित नहीं होते। वरिष्ठ नागरिकों में ऑनलाइन तकनीकी की जानकारी का अभाव ही डिजिटल विभाजन को बताता है

8. स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच में बाधाएँ

जागरूकता की कमी

कई वरिष्ठ नागरिक योजनाओं के बारे में नहीं जानते। जागरूकता की कमी सुविधा प्राप्त न करने का सबसे बड़ा कारण है।

प्रशासनिक जटिलताएँ

दस्तावेज़ीकरण और प्रक्रियाएँ जटिल होती हैं। जो वरिष्ठ नागरिकों के समझ में नहीं आती है।

आर्थिक सीमाएँ

निजी स्वास्थ्य सेवाएँ महँगी होती हैं। आर्थिक अभाव के कारण निजी स्वास्थ्य सेवाएं उनके लिए संभव नहीं हो पाती है।

भौगोलिक बाधाएँ

ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं की कमी का मुख्य कारण है गांव का विकास ना होना। हमारे देश में गांव का विकास आज भी पिछड़ा हुआ है।

सामाजिक उपेक्षा

परिवार और समाज का सहयोग कम होना सामाजिक उपेक्षा का मुख्य कारण है परिवार और घर से उपेक्षित व्यक्ति को समाज में सम्मान नहीं मिलता है।

9. न्यायालयों की भूमिका

न्यायपालिका का वरिष्ठ नागरिकों के जीवन में बहुत बड़ा योगदान है।भारतीय न्यायपालिका ने वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संविधान के अनुसार न्यायालयों ने जीवन के अधिकार को सम्मानजनक जीवन तक विस्तारित किया है।

कई मामलों में बच्चों को माता-पिता की देखभाल के लिए बाध्य किया गया इसके लिए कानून भी बनाया गया है। नहीं करने पर दंडात्मक प्रावधान भी बताया गया है।

न्यायपालिका ने यह स्पष्ट किया है कि वृद्धजन की उपेक्षा मानवाधिकारों का उल्लंघन है।वृद्धजन की उपेक्षा एक कानूनी अपराध है।

10. अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन करने से यह पता चलता है कि विकसित देशों में वृद्धजनों के लिए व्यापक सामाजिक सुरक्षा प्रणाली होती है, जैसे:-

सार्वभौमिक स्वास्थ्य सेवाएँ ,सामाजिक पेंशन

वृद्धाश्रम और सामुदायिक देखभाल

भारत को भी इन देशों से सीख लेकर अपनी प्रणाली को मजबूत करना चाहिए। और वरिष्ठ नागरिकों की स्थिति में परिवर्तन लाना चाहिए।

11. सुधार के सुझाव

11.1 नीतिगत सुधार

नीतिगत सुधार करते हुए योजनाओं का सरलीकरण करना चाहिए ।

एकीकृत पोर्टल का निर्माण करना चाहिए।

11.2 स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार

स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पतालों की संख्या बढ़ाना चाहिए।

मोबाइल स्वास्थ्य इकाइयों की शुरुआत करनी चाहिए।

11.3 सामाजिक जागरूकता

सामाजिक जागरूकता में वृद्धजन सम्मान अभियान चलाना चाहिए।

परिवारों में संवेदनशीलता बढ़ाना चाहिए।

11.4 कानूनी सुधार

कानूनी सुधार में कानूनों का सख्त पालन का नियम बनाना चाहिए। कठोर दंड की व्यवस्था करनी चाहिए।

त्वरित न्याय व्यवस्था की सुविधा प्रदान करना चाहिए।

11.5 डिजिटल सशक्तिकरण

डिजिटल सशक्तिकरण के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के लिए डिजिटल प्रशिक्षण

हेल्पलाइन सेवाएँ प्रारंभ की जानी चाहिए।

12. निष्कर्ष

वरिष्ठ नागरिक अर्थात बुजुर्ग हमारे समाज की अमूल्य धरोहर हैं। उनके लिए स्वास्थ्य देखभाल और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना केवल सरकार का ही नहीं, बल्कि पूरे समाज का सबसे महत्वपूर्ण दायित्व है।

यद्यपि भारत में अनेक योजनाएँ और कानून मौजूद हैं, लेकिन इनका प्रभावी क्रियान्वयन और कठोरता से पालन आवश्यक है। सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन, कानूनी जागरूकता और प्रशासनिक सुधार के माध्यम से ही वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानजनक जीवन प्रदान किया जा सकता है। और वृद्ध जनों की जीवन स्थिति को सुधारा जा सकता है।

संदर्भ (References)

1)भारत सरकार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की रिपोर्ट का अध्ययन

2)राष्ट्रीय वृद्ध स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम (NPHCE) दस्तावेज का अध्ययन

3)माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण अधिनियम, 2007 का अध्ययन

4)विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की वृद्धावस्था रिपोर्ट का अध्ययन

5)विभिन्न शोध पत्र एवं जर्नल लेखों का अध्ययन